

रात का गीत (1 जून)

भजन संहिता 55:22 अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा।

सकेत मार्ग के इस सफर में, कठिन अनुभूतियों से होकर जाते समय, परमेश्वर के किसी भी संत की आँखों में आँसू हो सकते हैं, लेकिन बड़बड़ाहट के लिये कोई माफ़ी नहीं है। बल्कि, प्रत्येक को स्वामी प्रभु यीशु के साथ यह कहना चाहिए, "जो कटोरा मेरे पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊँ?" उन लोगों के लिए जो परमेश्वर में उचित विश्वास के साथ कड़वाहट के झरनों से संपर्क करते हैं, जैसा कि मूसा ने किया था, प्रभु उनकी पहचान अनमोल वादों से कराते हैं, जो "जीवन के संकटों में से कड़वाहट को चुरा लेते हैं।" जैसे इस्राएलियों को एलिम और उसके आराम और छाया की ओर ले जाया गया था, उसी प्रकार परमेश्वर के आत्मिक इस्राएलियों को भी उनके सहने की क्षमता से अधिक लालसा में नहीं डाला जायेगा और न ही परखा जायेगा। `Z'13-217` R5278:6 (Hymn 112)
आमीन

रात का गीत (2 जून)

गिनती 28: 3,4 नित्य होमबलि के लिये एक एक वर्ष के दो निर्दोष भेड़ी के बच्चे प्रतिदिन चढ़ाया करना। एक भेड़ी के बच्चे को भोर को और दूसरे को गोधूलि के समय चढ़ाना।

हमारा बलिदान हमेशा कितना ही असंतोषजनक और अपरिपूर्ण हो, यदि इसे हम पिता के सामने हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु के बलिदान के मूल्य में और उनके द्वारा प्रस्तुत करें; तो इसे पवित्र और बेदाग माना जाता है, और यदि प्रभु यीशु के द्वारा यह बलिदान "पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ हो" (रोमियो 12:1; 1 पतरस 2:5), तो फिर चाहे हमारी भेंट हमेशा कितनी भी छोटी क्यों न हो, इस बलिदान का इनाम हमारा है। लेकिन यह आवश्यक है की ये भेंट स्वतंत्र इच्छा से चढ़ाई जाये, और एक पूरी होमबलि हो; इस भेंट के एक छोटे से टुकड़े को भी वेदी की भस्म कर देने वाली आग से बचाकर नहीं रखा जा सकता है। और जिनके पास स्वामी प्रभु यीशु की आत्मा है, उनमें से कोई भी अपने छोटे से सब कुछ में से, एक हिस्सा भी पीछे रखने की खोज में नहीं रहेंगे; वास्तव में, इसके विपरीत, वे लोग यह महसूस करेंगे की, ज्यादा से ज्यादा उनका बलिदान एक गहने के लिये, एक बड़े मूल्य के मोती के लिये, धूल के एक कण के समान है। `Z'89-Aug., p.1` R1133:1 (Hymn 325) आमीन

रात का गीत (3 जून)

इब्रानियों 12:14 ... उस पवित्रता के खोजी हो जिस के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।

पवित्रता कोई शोभा की वस्तु नहीं है जिसे हम अपनी जेब में रख सकें।

पवित्रता कोई वस्त्र नहीं है जिसे कभी कभी पहना जाये। पवित्रता अक्सर

धातु को बार-बार गरम और ठंडा करके कड़ा बनाने के जैसी है। जैसे कि फाइबर में बदलाव आता है, पवित्रता हमारे भी चरित्र के प्राकृतिक स्वभाव को बदल देती है। पवित्रता में बदलाव लाने वाला प्रभाव है। सचमुच, एक ऐसी पवित्रता है जिसमें मसीह की धार्मिकता की चादर के अंदर परमेश्वर के लोगों को पवित्र माना जाता है, जिसे हमको बपतिस्मा के दिन दिया गया था, जब हम पहली बार पाप से फिरे थे, उद्धारकर्ता को स्वीकार किया था और खुद को परमेश्वर को समर्पित कर दिया था। लेकिन इतना ही काफी नहीं है। हमें अपने चरित्र को बदलने का कार्य करना चाहिए, वही जिसकी हमने वाचा बाँधी है -- या जैसा की प्रेरित व्यक्त करते हैं, अवसर और परिस्थितियों के अनुसार, परमेश्वर हमारे अंदर अपनी पवित्र इच्छा के कार्य और उनकी पवित्र इच्छा के साथ - साथ जो भी पवित्र व्यवहार को करना चाहते हैं वह उन्हें करने दें। Z'15-233 R5739:3 (Hymn 219) आमीन

रात का गीत (4 जून)

1 पतरस 1:8 उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो जो वर्णन से बाहर...।

बहुत सारे ऐसे लोग जिन्होंने मसीह का नाम धारण किया है उनके पास परमेश्वर के प्रति भविष्य के लिये आशा है, लेकिन वर्तमान में उद्धार के

लिये आनंद करने के कारण बहुत कम हैं। ऐसे लोग अपने विशेषाधिकारों के मुताबिक नहीं जी रहे हैं। वे लोग उचित रूप से मसीह में नहीं बढ़ पाये हैं, जो उनके सिर हैं। उनको अपना विश्वास बढ़ाने की जरूरत है, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ, और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते हुये। इस प्रकार जैसे जैसे वे मसीह की पाठशाला के नियमों का पालन करेंगे, वे अधिक से अधिक ये कहने के लिए सक्षम हो जायेंगे की न केवल मसीह ने मुझे पाप और मौत के गहरे गड्ढे से उठाकर चट्टान - यीशु मसीह पर खड़ा किया है बल्कि उसमें ये भी जोड़ पाएंगे कि "और उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है"। Z'05-31 R3496:5 (Hymn 113)

आमीन

रात का गीत (5 जून)

यशायाह 32:18 मेरे लोग शान्ति के स्थानों में निश्चिन्त रहेंगे, और विश्राम के स्थानों में सुख से रहेंगे।

हम प्रभु के जितने करीब रहते हैं, और जितना अधिक हमारा विश्वास होता है, उतना ही अधिक हमें दिव्य मार्गदर्शन का एहसास होगा, और उतना ही अधिक हम उन साधनों का उपयोग करेंगे, जिन्हें परमेश्वर ने हमें मजबूत बनाने और हमें बनाए रखने के लिए प्रदान किए हैं। हम

संकट के समय में परमेश्वर को पुकार सकते हैं; हम उनके पास प्रार्थना में जा सकते हैं; और जो परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और मन लगाकर प्रभु के द्वारा नियुक्त किये गए मार्गों पर चलने की खोज में रहते हैं, उनको परमेश्वर कभी भी विफल नहीं करते हैं। यह सच है, इसलिये हम अपनी यात्रा में पूर्ण विश्वास और दृढ़ भरोसे के साथ आगे बढ़ सकते हैं। हमारा सबकुछ प्रभु को समर्पित करने के बाद, हमें प्रभु के मार्गदर्शन को ढूँढना चाहिए, क्योंकि हमारे जीवन के सभी मामलों में उनकी उपस्थिति हमारे साथ है। `Z'14-296` R5548:3 (Hymn 180) आमीन

रात का गीत (6 जून)

भजन संहिता 149: 1, 6 याह की स्तुति करो! यहोवा के लिये नया गीत गाओ, भक्तों की सभा में उसकी स्तुति गाओ! उनके कण्ठ से परमेश्वर की प्रशंसा हो।

परमेश्वर के संत लोग पहले से कहीं ज्यादा समझदारी से और पूरी तरह से परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। हम अपने प्रभु के चरित्र को बेहतर देख सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर के प्रति बहुत सारी अज्ञानतायें, गलत धारणा, रहस्य और धुँधलापन हट गयी हैं। परमेश्वर के वचन पहले से कहीं अधिक तेज के साथ चमक रहे हैं। हम यह नहीं देख सकते हैं कि हमारे भाई जॉन कैल्विन के कण्ठ से परमेश्वर की प्रशंसा हो सकती थी; क्योंकि निश्चित रूप से यह ऐलान करना की हमारे परमेश्वर लाखों की

मानवजाति में से हजारों को अनंतकाल की ताड़ना में डालेंगे, परमेश्वर की प्रशंसा करने जैसी बात नहीं हो सकती थी। न ही आज के उन लोगों के बारे में जो उसी भयानक उपदेश को सिखाते हैं, यह कहा जा सकता है, कि उनके कण्ठ से परमेश्वर की प्रशंसा होगी ... इस तरह के किसी भी विश्वास और शिक्षाओं के साथ परमेश्वर की प्रशंसा नहीं जुड़ सकती है। लेकिन प्रभु के लोग जो उनके वचन के करीब रहते हैं, वे अब परमेश्वर के प्रेम, ज्ञान, न्याय और शक्ति की अद्भुत कहानी को बताने में सक्षम हैं, जैसा पहले कभी नहीं था। `Z'15-347` R5804:4 (Hymn 96) आमीन

रात का गीत (7 जून)

2 कुरिन्थियों 11:3 परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएं।

यह अच्छा है की प्रभु के लोग सभी चीजों में हमेशा पिता को धन्यवाद देते हुए एक आनन्दित जीवन जीने का प्रयास करते हैं, और मसीह के कारण के लिए शर्मिंदा, होने के योग्य गिने जाने के कारण आनन्दित होते हैं। लेकिन जैसा कि प्रेरित कहीं और घोषित करते हैं, आइए हम काँपते हुए मगन हों; हमारा आनन्दित होना, लापरवाही, आत्म-संतुष्ट के प्रकार

का न हो, जो हमें फन्दे में फंसा सके; आइये हम मसीह में आनन्दित हों, जिन्होंने हमसे प्रेम किया और जिन्होंने हमें अपने बहुमूल्य लहू के द्वारा खरीद लिया है और जो हमारे साथ हर समय उपस्थित हैं, हमारे सबसे अच्छे दोस्त और सच्चे मार्गदर्शक के रूप में। आइये हम अपनी शक्ति और साहस और बुद्धि को महसूस करके आनन्दित न हों, बल्कि प्रभु में आनन्दित हों और इस तथ्य में आनन्दित हों, कि हमारे पास एक ऐसे महान रक्षक हैं, जो उन सबको छुटकारा दिला सकते हैं, जो अपने उद्धारकर्ता और रक्षक के द्वारा परम पिता के पास जाते हैं। इस प्रकार से प्रभु हमारी शक्ति, हमारा भरोसा, हमारी ढाल, हमारी झिलम हैं। Z'06-347 R3886:3 (Hymn 93) आमीन

रात का गीत (8 जून)

यूहन्ना 15:13 इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।

हम मसीह की देह के सदस्यों के लिए या किसी भी समर्पित विश्वास के घराने के सदस्य के लिए जो कुछ भी करें, उसके लिए प्रभु हमें कहते हैं कि, वे हमें ऐसा आदर देंगे कि मानो ये खुद प्रभु लिये ही किया गया हो। इसलिए, जैसे की इसमें हमारा कर्तव्य और विशेषाधिकार और आनन्द होगा, कि हम अपना जीवन प्रभु की सेवा में बलिदान कर दें, यह आवश्यक

है की हम अपने भाइयों के प्रति भी एक ऐसा ही बलिदान करने को तत्पर रहने वाला वाला प्रेम रखें, क्योंकि वे भाई लोग प्रभु के हैं, ताकि हम प्रभु और उनके कारणों के प्रति अपनी वफादारी का प्रदर्शन करने के लिये, अपना जीवन अपने भाइयों के लिए आनन्दित होकर बलिदान कर सकें। इसका मतलब यह जरूरी नहीं है की, हम अपने भाइयों की शारीरिक रूप से मदद और सेवा करने के लिये शारीरिक बल और स्वास्थ्य और जीवन को बलिदान कर दें, हालाँकि कई घटनाओं में ऐसा करना बहुत लाभदायक हो सकता है। प्रभु के चेले शरीर के अनुसार नहीं, पर आत्मा के अनुसार हमारे भाई हैं, और इस तरह से भाइयों के लिए शारीरिक रूप से अपने जीवन को बलिदान करना, खासकर ज्यादातर ये इशारा करता है की, हमें अपना शारीरिक स्वास्थ्य या साहस, ज्ञान, हुनर और जो भी जरिया हो, इस सेवा में, उसे प्रभु के भाइयों की आत्मिक हित के लिए बलिदान करना है। जैसे की, उदाहरण के लिए, इस सच्चाई का प्रचार करने से जुड़े सेवा के कार्यों में, यदि हमें बलिदान या खुद से इन्कार करना पड़े, या हमारे बल को खर्च करना पड़े, आदि, तो इसका मतलब यही है की, हम उसी अनुपात में अपने जीवन का एक अंश अपने भाइयों के लिए, मसीह की देह के सदस्य के लिये बलिदान कर रहे हैं। Z'07-36 R3932:6 (Hymn 191) आमीन

रात का गीत (9 जून)

1 पतरस 3:8 भाईचारे की प्रीति रखने वाले, और करुणामय, और नम्र बनो।

भाइयों के लिए प्रेम, जिसका वर्णन पवित्रशास्त्र में किया गया है, मसीह के देह में सदस्यता प्राप्त करने के स्पष्ट प्रमाणों में से एक है। यह प्रेम अलग-अलग स्तर का हो सकता है, लेकिन यह कुछ हद तक हमारा होना चाहिए अगर हम प्रभु के हैं, क्योंकि, "यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।" (रोमियो 8:9) लेकिन हमारे हृदयों में सुलग रही भाइयों के प्रति पवित्र प्रेम की यह लौ पर्याप्त नहीं है; बल्कि इस प्रेम की ज्वाला को हमारे हृदय में इस प्रकार से धधकना, जलना चाहिए की यह हममें न केवल प्रेम की गर्माहट को उत्पन्न करे बल्कि एक भस्म हो जाने वाले प्रेम को पैदा कर दे - एक ऐसा प्रेम जो न केवल भाईचारे में विभिन्न कमजोरियों और खामियों को नजरअंदाज करेगा और ध्यान से अच्छे गुणों को देखेगा, बल्कि एक ऐसा प्रेम जो भाइयों के लिये अपने जीवन को भी बलिदान करने को तत्पर रहेगा, क्योंकि वे भाई लोग प्रभु के समर्पित लोगों में से हैं, फिर चाहे उनको पाप और कमजोरियों के विरुद्ध कितना भी संघर्ष क्यों न करना पड़े। `Z'07-35` R3932:2 (Hymn 218) आमीन

रात का गीत (10 जून)

यूहन्ना 7:17 यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ।

हमारा मानना है कि सत्य के प्रति प्रेम के बिना किसी को भी "वर्तमान सत्य" के प्रकाश का अनुग्रह नहीं मिलेगा। इससे अधिक, हम यह मानते हैं कि यदि सत्य के प्रति सच्चे प्रेम - विचार और क्रियाओं की ईमानदारी को, अभिमान, महत्वाकांक्षा, व्यर्थ की महिमा या किसी अन्य चीज के लिए बलिदान कर दिया जाये, तो इसका परिणाम वर्तमान सत्य को खो देना होगा। आइए हम सदा अपने प्रभु के संदेश को प्रेरित के माध्यम से याद रखें, कि अब इस युग के अंत में वह एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेंगे, ताकि जो अधर्म से प्रसन्न होते हैं, वे सब झूठ की प्रतीति करें - जिन्होंने सत्य को इसके प्रति प्रेम के कारण ग्रहण नहीं किया था। आइए हम अपने विवेक की रक्षा करें, यह महसूस करते हुए कि हमारे विवेक के भ्रष्ट होने से निश्चित रूप से हमें चोट पहुँचेगी, ऐसा होने से हम प्रभु के लिये अनजान बन जाएँगे, और अभी तथा बाद में भी हमें प्रभु की सेवा से निश्चय अस्वीकार कर दिया जायेगा। `Z'06-277` R3847:5 (Hymn 49) आमीन

रात का गीत (11 जून)

लूका 24:48 तुम इन सब बातों के गवाह हो।

गवाह के रूप में प्रेरितों को केवल यह नहीं बताना था कि, उद्धारकर्ता का जन्म एक कुंवारी से हुआ था, न ही केवल उनके पवित्र, समर्पित जीवन के बारे में, न ही केवल हमारे प्रभु के पुनरुत्थान के बारे में, और न ही केवल उनके स्वर्गारोहण के बारे में बताना था, बल्कि इन सभी तथ्यों के अलावा उन्हें यह भी बताना था कि प्रभु यीशु एक उचित रूप से योग्य उद्धारकर्ता थे, कि उन्होंने व्यवस्था की सभी शर्तों की पूर्ति की थी, और यह कि अब वे उनकी सहायता के लिये जो उनके द्वारा पिता के पास जाना चाहते हैं, युगानुयुग जीवते हैं। कितनी विश्वसनीयता के साथ प्रेरितों ने अपने कार्य को पूरा किया! सच में, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने ऐलान किया था, वे परमेश्वर की सारी मनसा को लोगों को पूरी रीति से बनाने से नहीं झिझकते थे! सांसारिक ज्ञान बता सकता है, कि खुद को एक ऐसे स्वामी और शिक्षक का चेला बताने से, जिसे अपराधियों की तरह सूली पर मार डाला गया था, उनकी बदनामी होगी, और अपने स्वामी के लिये चेलों को इकट्ठा करने में सफलता मिलने में पूरी तरह से बाधा पहुँच सकती है। लेकिन इन विश्वसनीय गवाहों ने मांस और लहू से सलाह नहीं ली कि उनको क्या प्रचार करना चाहिए - उन्होंने कहानी को इसके सभी विवरणों के साथ सरलता से बताया, पतरस और जुदास की भी उपेक्षा नहीं

की, और प्रेरितों में बड़ा कौन होगा आदि विवाद के विवरण को भी नहीं छिपाया। जिस सादगी से परमेश्वर ने इस सत्य को लिखे जाने का इरादा किया था, वह सच्चाई स्पष्ट रूप से बाइबल के वृत्तांत में हमारे सामने आती है। `Z'06-396` R3911:3 (Hymn 23) आमीन

रात का गीत (12 जून)

फिलिप्पियों 2:10 ... वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।

जब हम अपने स्वामी प्रभु यीशु के इस सर्वोच्च पद पर विचार करते हैं, आइये यह न भूलें की उनकी दुल्हन भी प्रभु यीशु की सारी महिमा, आदर, अमरता में साँझा - वारिस होगी, और दुल्हन की श्रेणी का सदस्य बनने का विशेषाधिकार केवल "बुलाये हुए और चुने हुए और विश्वासी" लोगों के लिये ही है, जो की इस सुसमाचार युग के अत्यंत चुने हुआओं में से हैं। यदि हम पूरा प्रयत्न करके लगातार इस बात को ध्यान में रखें, तो अपने सारे व्यवहार और आचरण में कितने पवित्र और धार्मिक हो जायेंगे - सभी सांसारिक सुख और दुःख, सब संपत्ति और गरीबी, सारी कमजोरीयां और सब प्रकार से हमें नीचा दिखाया जाना कितना तुच्छ लगेगा! इस प्रकार, उन बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं के लिये हमारे बुलावे और चुनाव

को पक्का करने की इच्छा हममें और भी अधिक तीव्र हो जाएगी। Z'07-121 R3979:4 (Hymn 25) आमीन

रात का गीत (13 जून)

रोमियो 6:22 ...परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।

ये वास्तव में, जीवन के अद्भुत वचन हैं! वे हमें आशा की दिशा में प्रेरित करते हैं। यदि परमेश्वर सम्पूर्ण शारीरिक परिपूर्णता के बजाय दिल के सही इरादों को स्वीकार करेंगे, तो वास्तव में, हमारे लिये जो परिपूर्णता का स्तर ठहराया गया है, उसको प्राप्त करने की उम्मीद है। हम आत्मा के अनुसार या आत्मा के चलाये चल सकते हैं। जहाँ तक हमारे नश्वर शरीर का संबंध है, वो आत्मा की आवश्यकताओं के अनुसार नहीं चल पाता है, लेकिन हमारा मन आत्मा के अनुसार चल सकता है। हमारे इरादे परिपूर्ण हो सकते हैं। और हमारे स्वर्गीय पिता हममें जिसकी खोज कर रहे हैं, वह है हमारे इरादों की परिपूर्णता, और जहाँ तक संभव हो शरीर पर परिपूर्ण नियंत्रण। Z'11-340 R4869:5 (Hymn 267) आमीन

रात का गीत (14 जून)

भजन संहिता 107:13 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उसने सकेती से उनका उद्धार किया।

जैसा कि इस्राएल के क्लेश का प्रभाव उनके दिलों को प्रभु की ओर मोड़ना था और प्रभु के द्वारा वादा की गई सहायता के लिए पुकारने की ओर उनको ले जाना था, उसी प्रकार हमको परखने के लिये इस संसार, शरीर और शैतान और पाप और मृत्यु के दासत्व से मिले अनुभवों का उद्देश्य - मसीह में नई सृष्टि को प्रार्थना की ओर मोड़ना है, जिनके पास पिता के वादे हैं। यह सारे वादे हमारी अगुवाई करते हैं कि, हम ज्यादा से ज्यादा प्रभु की ओर देखें, जिनसे हमको सहायता मिलती है, और परमेश्वर के पुत्र का स्वर्ग से इन्तज़ार करें, और प्रभु के दूसरे आगमन पर कराहती हुई सृष्टि के लिए उद्धार की अपेक्षा करें। क्या यह सच नहीं है, कि अभी के दुःख और क्लेश, सब हमारे लिए कार्य कर रहे हैं, और हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करते जाते हैं, यदि हम सही तरीके से इन अनुभवों का अपने जीवन में अभ्यास करें? और अगर हम सच्चे इस्त्राएलियों के जैसा अब्राहम को परमेश्वर के द्वारा दिए गए वादे पर विश्वास रखें, तो हमारे पास, हमारी आत्मा के लिए लंगर है, जो पक्का और दृढ़ है, और पवित्र तम्बू में परदे के उस तरफ अति पवित्र में पहुँचता है, जैसा कि प्रेरितों के द्वारा वर्णन किया गया है। हम जानते हैं की,

पहले ही प्रभु यीशु, उस अति पवित्र में पहुँच चुके हैं। और उन्होंने हमारे लिए प्रायश्चित किया -- और उनके द्वारा ही हमें आशीषित छुटकारा मिलता है, जो की हम बहुत जल्द ही अपने पहले पुनरुत्थान के द्वारा अनुभव करेंगे, और यह क्षण भर में होगा, पलक झपकते ही अन्तिम तुरही फूँकी जाएगी: और हम प्रभु को वैसे ही देखेंगे जैसा की वे हैं और उनकी महिमा में हम सहभागी होंगे। Z'07-127 R3983:6 (Hymn 56) आमीन

रात का गीत (15 जून)

1 शमूएल 17:47 और यह समस्त मण्डली जान लेगी की यहोवा तलवार या भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिये कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।

हमारी "नई सृष्टि" अभी के समय में पुराने समय की इस कहानी के द्वारा क्या सबक सिख सकती है? दाऊद, जिनका नाम प्रेम को दर्शाता है, कई मामलों में मसीह यानि सिर और देह को छाया में दर्शाता है। दाऊद का गोलियत के साथ का अनुभव, सबसे पहले हमारे प्रभु को जंगल में चालीस दिनों तक जो लालसाएं आयी थीं, उसमें शैतान के साथ प्रभु के संघर्ष को अच्छे से दिखाता है। उस अवसर पर हमारे प्रभु की जीत, पिता और उनको जो कार्य सौंपे गए थे उनके प्रति उनकी वफादारी, और उनका अपना आत्म-बलिदान, इन सबका मतलब है, परमेश्वर और उनकी व्यवस्था के

साथ सद्भाव में रहने के इच्छुक मानव जाति की पूरी दुनिया के लिए विजय। क्या प्रभु ने हमें वचनों में नहीं बताया है, "डरो मत, मैंने संसार को जीत लिया है"? शैतान पर विजय पाते समय, जो की इस संसार का सरदार है, प्रभु एक ही समय में बुराई के सभी दूतों पर और पाप के दासों पर भी जीत प्राप्त कर रहे थे। प्रभु परमेश्वर और उनके प्रति और उनके वाचा के प्रति, वफादार रहे, और शैतान के प्रति सच्चाई के वचन रूपी पत्थर को फेंका, की, "ये लिखा है"। जैसा की गोलियत दाऊद के सामने माथे पर पत्थर लगने से गिर गया, उसी प्रकार हमारे प्रभु ने शैतान को हरा दिया था, जिन्होंने यह ऐलान किया था की "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था," और अपने विजय के परिणाम में यह भी ऐलान किया था की, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" और प्रभु ने अपने नाम के साथ अपने चेलों को उसी प्रकार अपनी सामर्थ्य में युद्ध करने के लिए और जयवन्त होकर आने के लिये और अंततः उनके राज्य में उसके साथ भागीदार होने के लिये भेजा, जिस में "पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीष मिलेगी।" Z'08-233 R4216:4 (Hymn App. G) आमीन

रात का गीत (16 जून)

2 कुरिन्थियों 6:3, 6 हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, कि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए। पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से, सच्चे प्रेम से।

जो जितना शुद्ध बनता जायेगा, ये तो निश्चित है कि वो ही निशाना होगा, हम देखते हैं कि - शिकारी का निशाना और पक्षियों की तुलना में चितकबरे पक्षी पर ज्यादा होता है। इसलिये हम सभी जो प्रभु के घर के पात्र हैं, वे शैतान के अग्निमय तीरों के लिये ख़ास निशाना हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि हम इस दुनिया, इस शरीर और शैतान के विरुद्ध संघर्ष करें। वे जो अपने हृदय में सही हैं, मन के शुद्ध हैं, परमेश्वर के प्रति सच्चे हैं, उत्साहित हैं, वे पूरी चौकसी के साथ अपने धार्मिकता के वस्त्र को साफ़ रखते हैं। यदि वे सचेत नहीं रहेंगे, तो अवश्य उनके वस्त्र अपवित्र हो जायेंगे। शैतान हमारे धार्मिकता के वस्त्र (प्रभु यीशु मसीह की धार्मिकता की चादर जो हमको उधार में मिली है) को छूने का विशेष प्रयत्न करता है, और हम जानते हों कि जहाँ कहीं भी शैतान छू देगा वो हिस्सा अपवित्र हो जायेगा, जिस किसी को भी शैतान छू लेता है उसे किसी न किसी मात्रा में हानि जरूर पहुंचाता है (शारीरिक या सांसारिक हानि)। हमें शैतान छू सके उसके पहले हमारे अंदर किसी न किसी मात्रा में पाप, अपराध, बुराई होती है। Z'13-185 R5259:5 (Hymn 258)

आमीन

रात का गीत (17 जून)

मत्ती 26:36 तब यीशु ने अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं।

क्या हम कटनी के इस समय में प्रभु के लोग होने के नाते उनकी कलीसिया पर आने वाली गतसमनी की परीक्षा की उस घड़ी के निकट नहीं आ रहे हैं? क्या हम काफी हद तक परीक्षा की उस घड़ी में अभी से ही नहीं आ गये हैं? क्या मसीह की देह के अंतिम सदस्यों को जल्द ही पूरा बलिदान देने तक अपने सिर (प्रभु यीशु मसीह) का अनुसरण नहीं करना होगा? हम अग्नि परीक्षा के लिए कितने तैयार हैं? क्या हम सो रहे हैं अथवा क्या हम प्रेरित के इन शब्दों पर ध्यान कर रहे हैं कि - जो सोते हैं वे रात ही को सोते हैं पर हम जो दिन के हैं, जागते और सावधान रहें; परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लें ताकी हम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सकें और बुरे दिनों का सामना कर सकें, परीक्षा की उस घड़ी में खड़े रह सकें जो हमपर अभी से ही आ चुकी है और शीघ्र ही भविष्य में और भी कठिन परीक्षाएँ आने वाली हैं जो निःसंदेह हमारी होगी। क्या हम उस समय के लिये तैयार हैं जब संभवतः लोग सामान्यतः तितर बितर होंगे जैसा की हमारे प्रभु के समय में “सब चेले उन्हें छोड़कर भाग गए थे”? हम उस परीक्षा की घड़ी में कितने साहसी रहेंगे ये सम्भवतः इस बात पर निर्भर करेगा की हमने अपने स्वामी और गुरु प्रभु यीशु मसीह जो हमारे आदर्श हैं उनके उदाहरण का कितना अनुसरण किया है

और सबसे पहले ये पक्का दृढ़ विश्वास कितना प्राप्त किया है कि हमारे पास दिव्य स्वीकृति है। इसलिए आइये यदि परमेश्वर की सुरक्षात्मक देखभाल के अंतर्गत हमारे जीवन में भी गतसमनी का वो क्षण आ जाये तो हम उससे बचने की कोशिश न करें, बल्कि हम भी ऊँचे शब्द से पुकार - पुकारकर और आंसू बहा - बहाकर उससे जो हमको मृत्यु से उस महिमामय पहले पुनरुत्थान के द्वारा बचा सकता है, प्रार्थनाएँ करें और ये याद रखें की हमारा भी एक वकील है, एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह। हमारे प्रभु यीशु हमारे स्वर्गदूत हैं जो हमें पिता का संदेशा बताते हैं, ये कहते हैं कि यदि हम उनके प्रेम में बने रहें तो अंत में सब कुछ सही होगा, और वो हमको जयवंत करने की इच्छा भी रखते हैं और सक्षम भी हैं, हाँ वो अपने मूल्य में हमें जयवंत से भी बढ़कर बना देंगे। Z'06-348 R3886:6 (Hymn 120) आमीन

रात का गीत (18 जून)

यशायाह 1:19 यदि तुम आज्ञाकारी हो कर मेरी मानो, तो इस देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाओगे।

परमेश्वर ने हमको आत्म - नियंत्रण का गुण सिखाने के लिए कुछ पाठ सिखाने का प्रबंध किया है, ताकि हम अपनी इच्छा से परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी रहें, इस दृष्टिकोण के साथ की हम शीघ्र ही

परमेश्वर के प्रतिनिधि बनकर परमेश्वर और उनकी आवश्यकताओं के प्रति दुनिया को आज्ञाकारी बनने का पाठ सिखायेंगे। यह आम तौर पर स्वीकृत सिद्धांत है कि दूसरे लोगों पर शासन करने के लिए केवल वही योग्य है, जिसने खुद आज्ञाकारिता का पाठ सीखा है। हमारे प्रभु यीशु मसीह ने आज्ञाकारिता का क्या मतलब है, यह बहुत बड़े दुख की कीमत पर सीखा है। प्रभु यीशु ने तत्परता के साथ अपने आप को परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से समर्पित किया। हमारे अन्दर मसीह की आत्मा प्रगट होनी चाहिए और उसमें बढ़ोतरी होनी चाहिए, ताकि हम भविष्य में मसीह से सम्बंधित कार्यों के लिए तैयार हो सकें, हजार साल के युग के कार्य के लिए। Z'16-132 R5890:2 (Hymn 4) आमीन

रात का गीत (19 जून)

इफिसियों 6:13 इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको...।

कोई भी मनुष्य तब तक युद्ध के हथियार नहीं पहनता जब तक की उसे किसी युद्ध में जाने की उम्मीद न हो। यदि वह मसीह के क्रूस का सैनिक है, तब "आत्मा की तलवार" उसके लिए बहुत बड़ा हथियार है जिसके द्वारा वह परमेश्वर के प्रति अपनी वफ़ादारी और मजबूती को साबित करता है। भाइयों को चाहिए की वे एक दूसरे को अति पवित्र विश्वास में

बढ़ाएँ, विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ें, परमेश्वर और सच्चाई के प्रति अपनी वफादारी दिखाएं। (यहूदा 1: 20 वचन; 1 तिमोथियस 6:12 वचन) जो अन्धकार के प्रभाव में हैं और उसके सामने झुक जाते हैं, वे नए क्रम की वस्तुओं के लिए अयोग्य हैं, और मसीह के साथ उनके राज्य में सहभागी होने की उम्मीद नहीं कर सकते, पर वे उनमें से होंगे जिनको प्रभु इनकार कर देते हैं, क्योंकि वे अयोग्य हैं। Z'12-288 R5098:2 (Hymn 266)
आमीन

रात का गीत (20 जून)

याकूब 4:6,7 ...परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ...

यद्यपि हम पूरी ललक के साथ भविष्य में हमारे महिमामय वाले पड़ाव की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, जब प्रभु की महिमा उस आत्मिक मन्दिर को भर देगी, जब "हम ऐसा पूरी रीति से पहचानेंगे, जैसे हम पहचाने गये हैं", फिर भी आइये हम ये नहीं भूलें कि, यदि हम प्रभु के अनुसार अपने आपको ढालने और बनाने के लिए खुद को प्रभु यीशु मसीह की पाठशाला में समर्पित नहीं करेंगे, तो हमको इस दौड़ से अलग कर दिया जाएगा। हमारे नामों को उस विशेष भूमिका से बाहर निकाल दिया जाएगा और

हमारे मुकुट दूसरों को दे दिए जाएंगे। इतने बड़े इनाम की इतनी बड़ी हानि होने की सम्भावना को पूरी तरह से देखने के बाद ही प्रेरित लिखते हैं, "इसलिये जब कि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है, तो हमें डरना चाहिए ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन उससे वंचित रह जाए"। अभी के समय में जो जीवित पत्थर तैयार हो रहे हैं, उनमें अगर घमण्ड की बढ़ोतरी हो, कोई भी असमर्पित अभिलाषा की बढ़ोतरी हो, तो वे जीवित पत्थर जो अभी तैयार हो रहे हैं, बहुत बड़े खतरे में हैं। अगर हमारे अन्दर ऐसा दोष आ जाए, तो ये हमें परमेश्वर की विशेष सेवा कार्य के लिए अयोग्य बना देगा। और यदि ये हमारे अन्दर घमण्ड ला दे, तो ये शायद हमारे अन्दर डाह, नफरत, ईर्ष्या, बुरा बोलना और बुरा सोचने को भी उत्पन्न करेगा, और ये सब मसीह की आत्मा के विरुद्ध है और जल्द ही ऐसे लोगों की गिनती उनमें होगी जो "मसीह के जन नहीं।" Z'08-376 R4297:5 (Hymn 198) आमीन

रात का गीत (21 जून)

रोमियो 7:18 क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती। इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।

इस नई इच्छा, नए मन और शारीरिक मन और खुद शरीर के बीच में असहमति के कारण उन्हें नियंत्रित करने और नई सृष्टि के इरादों के अनुरूप रखने के लिए निरंतर सतर्कता की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह शरीर और इसके शारीरिक मन को हालाँकि मृत माना जाता है, फिर भी वास्तव में ये बिल्कुल जीवित हैं। इसका मतलब है एक अच्छा चलने वाला युद्ध, और इस युद्ध में सफलता का मतलब है विजय, और सुसमाचार युग के दौरान, इस युद्ध में जयवंत होनेवालों के लिए ही प्रभु ने विशेष इनाम, आदर और आशीर्षें रखी हैं। मन की इस मलिनता का एक हिस्सा स्वार्थ है, जो अक्सर इतना तुच्छ होता है कि खुद को शर्मिंदा होना पड़े, और अपने इस स्वार्थ को लोग अक्सर उदारता के विभिन्न बहानों या बाहरी आडम्बर, उपहार आदि के द्वारा छुपाते हैं। मन की मलिनता से सम्बंधित अन्य लक्षण ईर्ष्या, लोभ, महत्वाकांक्षा हैं। जैसा की प्रेरित कहते हैं, हमें यह पहचानना चाहिए की स्वार्थ के इन विभिन्न रूपों का मूल बुराई है, यह सब शरीर के कार्य हैं और शैतान के कार्य हैं। कामुकता या विषय भोग इस मलिनता का एक और हिस्सा है - स्वार्थ का दूसरा रूप या आत्म-मोह का प्रेम। मन की इन सभी स्थितियों के साथ, नई सृष्टि को इनका विरोध करना चाहिए, घृणा करनी चाहिए, इन्हें नष्ट कर देने की हद तक इनके विरुद्ध लड़ना चाहिए। Z'07-134 R3986:2 (Hymn 103) आमीन

रात का गीत (22 जून)

1 यूहन्ना 4:21 और उस से हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।

जैसे सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है, उसी तरह यह सिद्ध प्रेम हमारे अंदर से इस झूठी धारणा को भी दूर करता है कि दूसरे हमारी बुराई चाहते हैं या हमारे प्रति बुरा इरादा रखते हैं। दूसरों के लिए प्रेम से भरा, एक परोपकारी हृदय, बल्कि यह मान लेना पसंद करेगा कि दूसरों के द्वारा की गयी भूल अनजाने में हुई चूक है, या वे अपने मित्रों के व्यवहार का सामना कुछ अन्य इसी तरह के अच्छे विचारों से करेंगे, और किसी अनुचित दिखने वाले व्यवहार को अपनी ताड़ना होना तभी मानेंगे जब उसके पीछे के बुरे इरादे के बारे में उनको पक्का मालूम हो। हालाँकि इसके बावजूद भी उनको अपने सताने वालों के बारे में उदारता से सोचना चाहिए, वे भी आदम के पाप में गिरे हुए हैं, यह महसूस करना चाहिए, और जो उन्हें क्रूरता से उपयोग में लायें और सताएँ, उनके लिए प्रार्थना करने के लिये तैयार रहना चाहिए। धन्य हैं वे, जो इस प्रकार से धार्मिकता को थामे रहते हैं और अपने शत्रुओं और सताने वालों के प्रति प्रेम की भावना रखते हैं, और इस प्रकार वे निश्चित हो सकते हैं कि उनका सताया जाना सच्चाई और धार्मिकता के प्रति उनकी वफ़ादारी के कारण है, और उनके अपनी निजी अनोखेपन और विचित्रता के कारण नहीं है। धन्य हैं वे,

क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। प्रभु उन लोगों की तलाश कर रहे हैं जो धार्मिकता के सिद्धांतों के प्रति इतने विश्वसनीय हैं कि, वे इन सिद्धांतों का अभ्यास अपने शत्रुओं पर तब भी करेंगे, जब वे उनके द्वारा सताए जा रहे होंगे। अगर स्वर्ग का राज्य इस तरह के लोगों लिए है तो यह निश्चय है की वैसे लोग छोटी झुण्ड ही हैं। आइए हम उस छोटी झुण्ड का सदस्य बनने का अधिक परिश्रम से प्रयास करें - हमारे बुलावे और चुनाव को सुनिश्चित करने के लिए। `Z'06-74` R3736:2 (Hymn 296)
आमीन

रात का गीत (23 जून)

इफिसियों 4:1,2 जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।

हम अपने प्रति परमेश्वर की दया की सराहना, खुद को प्रभु के चरित्र की शिक्षा देकर और विश्वास के घराने के सभी लोगों के प्रति अधिक से अधिक दयालु और उदार बनकर दिखाते हैं। और अगर भाइयों के प्रति कृपालु होंगे, तो स्वाभाविक रूप से हम सभी मनुष्यों के प्रति भी उदार होंगे। दूसरे शब्दों में, जब हम अपनी कमजोरियों और दोषों को याद करते हैं और उनकी सराहना करते हैं, तो यह हमें भाइयों और सभी मानव जाति

के साथ भी सहानुभूतिपूर्ण बना देगा। और कृपा, उदारता, सहानुभूति ऐसे गुण हैं, जिसमें परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। वैसे लोग जो आत्मा के इन अनुग्रहों को अपने में उत्पन्न करते हैं, वे प्रभु की दृष्टि में भावते हुए होते हैं, और उन लोगों को यीशु के साथ उनकी महिमा के सिंहासन में भागीदार होने के लिये योग्य बनाया जाता है और तैयार किया जाता है; क्योंकि उस महान मसीह के राज्य की स्थापना का उद्देश्य ही मानवजाति के हजारों लोगों पर कृपा दिखाया जाना है, जब लोग दिव्य समर्थन और आशीष की ओर स्पष्ट ज्ञान के तहत और उस समय जो सहायता दी जायेगी उसके द्वारा फिर से फिरेंगे। 'Z'12-359' R5135:2 (Hymn 63) आमीन

रात का गीत (24 जून)

मत्ती 24:42 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।

सब ही बुद्धिमान कुंवारियां को इस नज़रिये में रहना है जैसा की इस दृष्टान्त में उनको आदेश दिया गया है। बुद्धिमान कुंवारियां को इस तथ्य का ज्ञान होना चाहिए की दूल्हा आ रहा है; उनके पास मशाल होनी चाहिए जिसमें तेल की पूरी आपूर्ति होनी चाहिए। जो बुद्धिमान कुंवारियां हैं, जो तैयार स्थिति में हैं, वे अभी के समय चल रही घोषणा, "देखो, दूल्हा आ

रहा है", को सुनकर न तो सावधान होंगी और न ही अचंभित होंगी। हम मनुष्य के पुत्र (प्रभु यीशु मसीह) की उपस्थिति (परोसिया) के समय में रह रहे हैं -- बुद्धिमान कुंवारियां पहले से अपने आप को तैयार करके कतार में खड़ी होकर शादी में प्रवेश कर रही हैं; बुद्धिमान कुंवारियों की गिनती बहुत जल्द ही पूरी हो जाएगी और दरवाज़ा बन्द हो जाएगा। वे सब जिनके हृदय प्रभु की उपस्थिति के संदेश को सुनने के लिये तत्परता रखते हैं और ध्यान से इस संदेश को सुनने का इंतजार कर रहे हैं, और जिनके हृदय में प्रभु की आत्मा पूर्ण मात्रा में है, वे लोग 'दूल्हा आ गया है', की प्रथम घोषणा में ही बहुत जल्द आकर्षित हो जायेंगे। ये लोग, अपनी मशालों को छाँटते हुए, पवित्रशास्त्र की जाँच करते हुए, इस घोषणा की सत्यता को शीघ्रता से समझ जायेंगे, और तेजी से तैयार होकर बुद्धिमान कुंवारियों के साथ अपनी जगह बनायेंगे। प्रभु यीशु मसीह की उपस्थिति से सम्बन्धित विषय के सत्य की घोषणा, वास्तव में एक परीक्षा है, जो यह परखती है की, प्रभु की कुंवारियाँ होने का दावा करने वालियों में से वे कौन हैं, जिनकी कुप्पियों में तेल है, और नम्रता, धीरज, प्रेम, भक्ति, और दूल्हे से सम्बन्धित वस्तुओं में रुचि होने की सही आत्मा है। इस तरह के और केवल इस तरह लोगों को ही दूल्हा चाहेगा या इन्हें राज्य के अंदर प्रवेश करने की अनुमति मिलेगी। Z'06-315 R3869:4 (Hymn 318) आमीन

रात का गीत (25 जून)

यहूदा 3 ...उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।

उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था, का मतलब कभी-कभी ऐसा लग सकता है की, एक व्यक्ति पवित्र शास्त्र के विभिन्न विषयों पर दूसरे व्यक्ति के साथ बहस करे, और फिर भी ऐसा करने में उनका असली मकसद घमंड हो सकता है। घमण्ड स्वार्थ का हिस्सा है; इसलिए अपने स्वयं के विचारों के लिए बहस करने में हो सकता है की कोई घमण्ड को बढ़ावा दे रहा हो। इस वचन में जिस विश्वास के लिए पूरा यत्न करने को कहा गया है, उसके अनुसार परमेश्वर जिस वाद - विवाद की स्वीकृति देंगे, उसके अनुसार जो कुछ भी परमेश्वर के वचन सिखाएं, उसे पाने की चाहत रखना। हमें अनुचित तरीके से बहस नहीं करनी चाहिए, न ही अपशब्द बोलने चाहिए। हमारे सभी वाद - विवाद में, हमें पवित्र आत्मा के फल को प्रकट करना चाहिए - सौम्यता, भाईचारा, प्रेम। इस प्रकार से उचित वाद - विवाद का हिस्सा क्रोध, घृणा, द्वेष या कलह नहीं होगा। Z'12-215 R5057:4 (Hymn 329) आमीन

रात का गीत (26 जून)

इफिसियों 1:11 उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने।

यह सवाल स्वाभाविक रूप से उठता है, परमेश्वर को कर्म के बजाय विश्वास की परीक्षा क्यों करनी चाहिए? इसका उत्तर यह है कि सभी प्रकार के कार्य उसे करनेवाले की क्षमता पर निर्भर करते हैं, और यह कि आदम की पूरी जाति अपने पहले माता-पिता के पतन के कारण, परिपूर्ण कार्य करने में असमर्थ हो गई है। कोई भी पूरी तरह से धर्मी, पूरी तरह से बुद्धिमान, पूरी तरह से प्रेममय नहीं हो सकता है; हमारी वर्तमान स्थिति में ऐसा होना असंभव है। इसलिए, अपनी बुद्धि और प्रेम के अनुसार, परमेश्वर हमारी परीक्षा उन क्षेत्रों में नहीं बनाते हैं जिनमें हम बिलकुल अक्षम हैं, बल्कि वे अपनी बुद्धि, अपने प्रेम और अपने वादों के अनुसार, हमारी परीक्षाएँ विश्वास के ऊपर बनाते हैं। इनमें से किसी पर भी संदेह करना हमारी आशा के आधार को कमजोर करना होगा। हमें एहसास होता है कि हम एक गिरी हुई स्थिति में हैं, कि हम बाकि की मानवजाति की तरह मर रहे हैं। हमने परमेश्वर के वचन के माध्यम से सुना है कि उन्होंने एक उद्धारकर्ता प्रदान किया है, लेकिन परमेश्वर और मसीह ने जो कुछ भी किया है, उसके बावजूद भी हम देखते हैं कि चीजें वैसे ही जारी हैं जैसी वे थीं। हमारा विश्वास, हालांकि, हमें यह आश्वासन दिलाता है कि परमेश्वर, जो अंत के बारे में आदि से जानते हैं, अपनी मर्जी के अनुसार

सभी चीजों में काम कर रहे हैं, और कुछ ही समय में वे पृथ्वी में धार्मिकता को स्थापित करेंगे। 'Z'12-321' R5115:2 (Hymn 197) आमीन

रात का गीत (27 जून)

यशायाह 55:9 क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है॥

जब हम परमेश्वर की दिव्य योजना के भव्य रूप को देखते हैं, तब हम पाप पर विजय पाने और पूरी पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीष देने के पीछे के परमेश्वर के परम उद्देश्य को देख सकते हैं, जब पूरी पृथ्वी यहोवा की भलाई के ज्ञान से भर जाएगी और सबको सुधार के लिए अनुकूल अवसर मिलेगा - और हम यह भी देखते हैं कि यहूदियों के युग और सुसमाचार के युग के चुनाव भी अंततः संसार को आशीष देने के भव्य अंत तक पहुँचने का एक माध्यम हैं। तब हम यह पहचानना शुरू करते हैं कि परमेश्वर के तरीके मनुष्य के तरीकों से कितने ऊपर हैं और परमेश्वर की योजनायें मनुष्य की युक्तियों से कितनी ऊँची हैं, और हम परमेश्वर के प्रेम की ऊँचाइयों और गहराईयों और लंबाईयों और चौड़ाईयों और संसार को आशीष देने के लिए बनाये गए प्रावधानों को पहचानने लगते हैं। और जिस अनुपात में हम इस महिमामय चित्र को देखते हैं, उसी के अनुसार

हमारा आंतरिक मनुष्य उसकी शक्ति से मजबूत होता है, और हम हमारी संकीर्णता और स्वार्थ से बाहर निकलते हैं, और परमेश्वर के प्रिय पुत्र के स्वरूप में अधिक से अधिक गठित होते हैं, और इस प्रकार से स्वर्ग के पिता के स्वरूप में भी तैयार होते हैं। ओ, तब, हममें से प्रत्येक और सभी उन लोगों में से हो सकते हैं, जिन्हें प्रभु "अत्यंत चुने हुए" के रूप में जानते हैं - उनमें से एक हो सकते हैं, जिन्हें प्रभु अभी के समय में अपने छोटे झुंड के चुनाव के वर्तमान कार्य के संबंध में उपयोग करेंगे, और बाद में जिन्हें प्रभु पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीष देने के अपने महान कार्य में उपयोग में लायेंगे। इस तरह की संभावना के साथ हम क्या परीक्षाओं और कठिनाइयों को अच्छी तरह से सहन कर सकते हैं! Z'07-93 R3964:4 (Hymn 58) आमीन

रात का गीत (28 जून)

प्रकाशितवाक्य 3:18 इसी लिये मैं तुझे सम्मति देता हूँ कि आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले तू कि धनी हो जाए,...

किसी मसीही के सामने जब एक नई परीक्षा पेश की जाती है, तब यदि वो अपने दिमाग में इस वचन को याद करे, तो उसके साहस को प्रोत्साहन मिलेगा, उसका दिल धीरज से सहने के लिए पक्का होता जायेगा और वो

आत्म - बलिदान करने के लिए सचेत और फुर्तीला हो जाएगा। "आग में ताया हुआ सोना"! इसे बिना कड़ी परिक्षा और आग के बिना कैसे ताया जा सकता है? इसके मैल को इसके अलावा और कैसे निकाला जा सकता है? कोई और तरीका नहीं है। इस कारण, "इससे अचम्भा मत करो"; आग को जलने दो, मैल को भस्म होने दो; और प्रिय भाइयों, ये ध्यान रखें की आंच की गर्मी में से तुम वेदी पर से "जीवित बलिदान" को उठा न लो। हमारे महान सोनार प्रभु यीशु की नज़र हम पर लगातार है; और जिस तरह सोने को तपाने वाला धातु के बर्तन में रखे सोने को लगातार देखते रहता है, कि कब उसे उसमें अपना चेहरा दिखाई दे, उसी तरह हमारे प्रभु भी जो महान तपानेवाले हैं, उनकी आँखें भी हम पर है। वो ध्यान से देख रहे हैं कि, कैसे हमारा चरित्र रूपी अनमोल धातु उनके स्वरूप को दिखायेगा। और सरल भाषा में, हम पर आई हर परिक्षा में वो ये देख रहे हैं कि, हमारी क्रियाओं का नियंत्रण किससे प्रभावित है? क्या हम अभी के लाभ, या दुनिया के सिद्धान्त, या निजी मित्रता, या धरती के प्रेम -- पति या पत्नी का प्रेम, बच्चों का प्रेम, या घर या जमीन या मनुष्यों में प्रतिष्ठा, या आराम के प्रति चाहत, या किसी भी किमत पर शान्ति पाने की चाहत, आदि से प्रभावित होकर परिक्षाओं का सामना करते हैं या फिर इसके विपरीत, दूसरी तरफ, हर एक परिक्षा में हमारी क्रियाओं का नियंत्रण सत्य और धार्मिकता के स्पष्ट सिद्धान्तों से प्रभावित रहता है? क्या हम इन सिद्धान्तों का बचाव पूरे जोश और ऊर्जा से करने को तैयार हैं, चाहे हमें इन सिद्धान्तों को बचाने के लिए कठिन परिश्रम ही न करना पड़े या

दुःख ही न उठाने पड़े या कठिन परिश्रम करते हुए दुःख भी उठाने पड़े?
और इस प्रकार क्या हम विश्वास की अच्छी कुशती को इसके कड़वे अंत
-- यानी कि मृत्यु तक भी लड़ते हैं? Z'96-44 R1944:5 (Hymn 93)
आमीन

रात का गीत (29 जून)

लैव्यवस्था 20:7,8 इसलिये तुम अपने आप को पवित्र करो; और पवित्र
बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। और तुम मेरी विधियों
को मानना, और उनका पालन भी करना; क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करने
वाला यहोवा हूँ।

इसका मतलब ये है कि आप परमेश्वर के लिये अपने आप को अलग कर
लें, और परमेश्वर भी आपको खुद के लिये अलग कर लेंगे। इस काम में
हमारी भी हिस्सेदारी है और परमेश्वर की भी हिस्सेदारी है। यदि हम पूरी
तरह समर्पण करके अपना सबकुछ परमेश्वर की सेवा में लगा देंगे तो
परमेश्वर भी हमारा अभिषेक करेंगे; वो हमें स्वीकार करेंगे और अपने लिये
अलग कर लेंगे। परमेश्वर हमको स्वीकार कर लेने का संकेत हमें अपनी
पवित्र आत्मा से उत्पन्न करके देते हैं। वैसे लोग शीघ्र ही ये महसूस करना
शुरू कर देते हैं कि उनके पास एक नया मन है, एक नया स्वभाव है, एक
नया हृदय है। इसी श्रेणी के लोगों के लिये प्रेरित पौलुस ने एक वचन में

यह कहा है कि तुम्हारे लिये "परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो"। आपने जो खुद को परमेश्वर को समर्पित कर दिया है और जिन्हें परमेश्वर ने स्वीकार करके अभिषिक्त कर दिया है, उनको परमेश्वर ने अपने सेवा कार्यों के लिये अलग करके रखा है। Z'16-100 R5877:3 (Hymn 208) आमीन

रात का गीत (30 जून)

1 थिस्सलुनीकियों 5:23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे...।

अंग्रेजी के दो शब्दों सैंक्टिफिकेशन और कॉंशिक्रेशन का मतलब हिंदी में पवित्रीकरण और समर्पण लिया गया है इस रात के गीत के अनुवाद के लिये। अंग्रेजी के इन दो शब्दों के मतलब में कुछ अंतर है लेकिन कभी--कभी इन शब्दों को एक दूसरे के बदले में उपयोग में लाया जाता है। कॉंशिक्रेट शब्द जिसे कि बाईबल में 'पवित्र' शब्द में अनुवाद किया गया है, इसके पीछे का विचार 'समर्पण' का है। समर्पण करना एक दृढ़ कदम है जिसे किसी एक क्षण में लिया जाता है। इसका मतलब हुआ इच्छा को और सब कुछ को परमेश्वर को अर्पण कर देना। जिस किसी ने भी अपनी इच्छा को और खुद को निश्चित रूप से प्रभु को समर्पित नहीं किया है, उसने कभी भी सच्चा समर्पण नहीं किया है। हमारा ये मानना है कि इस

कदम को छोड़कर और कोई भी दूसरा कदम परमेश्वर के चुने हुएों को लेना जरूरी नहीं है, दूसरे शब्दों में, किसी और कदम की जरूरत ही नहीं है, हमें केवल पूरी तरह से इच्छा का और खुद का और सब चीजों का समर्पण करना है। यही हमारा एकलौता कदम है। पवित्रीकरण शब्द में न केवल शुरुआत में किये गए इस निश्चित और पुरे समर्पण का ख्याल है बल्कि ये शब्द पुरे चरित्र में बदलाव की प्रक्रिया और राज्य के लिये तैयारी को भी दर्शाता है। चरित्र में बदलाव की यह प्रक्रिया मसीही जीवन के पुरे मार्ग में लगातार बढ़ते रहती है जब तक की यह चरित्र पूरी तरह से बढ़ न जाये, पक न जाये, और इस बदले हुए चरित्र को मसीही मार्ग के अंत तक संभाल कर रखना है। Z'16-99 R5876:6 (Hymn 196) आमीन